Think India (Quarterly Journal)

ISSN: 0971-1260 Vol-22, Special Issue-08

in collaboration with

Indira Gandhi Government Post Graduate College,

Bangarmau, Unnao-209868, Uttar Pradesh, India

स्वच्छ भारत का समाजवैज्ञानिक वि लेषण

डॉ0 नीरज कुमार राय,
सहायक प्रोफेसर–समाजशास्त्र,
राजकीय महिला महाविद्यालय, ढिंढुई, पट्टी, प्रतापगढ़, उ0प्र0।
मोबाइल न0ः 9889323649

भोध सारां ाः

हाल के वर्षो में, भारत में प्रर्यावरण दुर्द ाा के स्वरूपों के प्रति जनचेतना में एक असाधारण वृद्धि हुई है। यह एक आ चर्यजनक एवं स्वागतयोग्य परिवर्तन है जो एक ओर पर्यावरण के प्रति लोक–जागरूकता को प्रभाव ाली मीडिया कवरेज द्वारा प्रद ित कर रहा है तथा दूसरी ओर नये सरकारी–तंत्रों के गठन एवं पर्यावरणीय प्रबन्धन के विभिन्न आयामों के प्रति जन–चेतना जाग्रत कर रहा है। वि व में यह जगह, स्थानीय स्तर से लेकर वै वक संसाधनों का यह अवक्षय लघु–कालिक विकासात्मक क्रियायें राज्य–प्रणाली का एक आधुनिक स्वरूप हैं। राज्य द्वारा भुारू किये गये विकास से प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक भोषण हो रहा है तथा उसके विरोध में आवाज उठाने के लिये स्थानीय स्तर से लेकर वै वक स्तर तक लोगों ने स्वंय को संगठित किया। यद्यपि प्रारम्भिक समय में इन आवाजों को उतना महत्व नहीं मिला, लेकिन हाल में बाहरी एजेन्सीज जैसे कि मीडिया, नागरिक समाज और सामाजिक कार्यकर्ता वर्ग ने इस मुददे का बहुत गम्भीरता से सार्वजनिक चर्चा में भाामिल किया जिससे इन मुददों को संवेदन ीलता प्राप्त हुई। ये जो आवाजें उठी इनके द्वारा प्राकृतिक संसाधनों को पुनः स्थापित करने के लिये प्रयास एवं विकास तथा आधुनिकीकरण के वैकल्पिक दृष्टिकोण अपनाने की आव यकताओं की अभिव्यक्ति के साथ–साथ सामाजिक आन्दोलन के संस्थाकरण का जन्म हुआ। प्रजातीय, वर्ग, लिंग–विभेद पर आधारित सामाजिक आन्दोलन की परम्परागत श्रेणियों से हटकर पर्यावरण को नव–सामाजिक आन्दोलन द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र में एक नयी परिचर्चा के रूप में स्थान मिला जिसके द्वारा वर्ग, वर्ण तथा लिंग से हटकर एक समान मुददा–'हमारे पर्यावरण की रक्षा' के आधार पर वि व के विभिन्न हिस्सों से लोग आकर्षित हुये।

मुख्य बिन्दुः *पारिस्थितिकी, स्वच्छ भारत, पर्यावरणीय प्रबन्धन, मीडिया, आधुनिकीकरण, नव–सामाजिक आन्दोलन*।

पारिस्थितिकी आधुनिकीकरण सिद्धान्त ने एक क्रांतिकारी एवं परिवर्तनकारी कदम आगे रखा है, एक ऐसे मार्ग के रूप में जिसमें आधुनिक समाज मुख्यतः पर्यावरणीय समस्याओं के साथ द्वन्द्व की स्थिति में रहता है। ऐसा करने में, आधुनिक समाज की संस्थायें, जैसे कि बाजार, राज्य, विज्ञान और तकनीकि आदि को पर्यावरणीय संरक्षण को अनुरूप तब्दील किये जाने की आ यकता है। (सक्सेना : 2015 सक्सेना एवम् सक्सेना : 2017)

हड़प्पा और मोहन जोदड़ो नगर के निवासियों ने स्वच्छता के सन्दर्भ में जिस जागृति का परिचय दिया कदाचित् ही किसी अन्य संस्कृति में ऐसी जाग्रति का उदारहण प्राप्त हो। इस संस्कृति में भौचालय व स्वच्छता सम्बन्धी विचार क्रान्तिकारी रहे हैं। सुनियोजित व पूर्ण विचार विम र्ा की फलश्रुति का अनुभव इस संस्कृति में होता है। घर में स्नानागार, भौचालय का वि ोष प्रबन्ध देखा गया है। स्वच्छता संदर्भित कई अव ोष इस संस्कृति में पुरातत्व विभाग को प्राप्त हुए हैं। प्राचीन सभ्यता व संस्कृति के साथ गुंफित हमारी स्वच्छतापरक समझ को एक नई दि ाा देने के लिए स्वच्छता के समाज ाास्त्र की संकल्पना सुलभ इंटरने ानल नामक गैर–सरकारी संस्थान के स्थापक डॉ0 बिन्दे वर पाठक ने ि ाक्षा के द्वारा आम जन तक पहुँचाने की अभीष्ट प्रयास किया। हेतुकर झा, बी0के0 नागला, रिचार्डा पयास, आ ाीष सक्सेना, मोहम्मद अकरम, अनिल वाघेला जैसे समाज वैज्ञानिकों ने स्वच्छता के समाज ाास्त्र विषयों की पुस्तकों की रचना की है। इन विचारकों ने समाज ाास्त्र व समाज के विभिन्न पहलुओं को स्वच्छता का समाजभाास्त्र की परीधि में समाविष्ट किया है। समाज ाास्त्र की ही एक भााखा होने की बदौलत विज्ञान की वि ोषताओं से यह भाास्त्र महत्तपूर्ण हो जाता हैं। परिणामस्वरूप इस भाास्त्र का महत्व अधिक बढ़ गया है। स्वच्छता को अन्य कई विषयों के द्वारा अपने अभिन्न व वि ोष अंग के रूप में भी अंगीकार किया

Think India (Quarterly Journal)
ISSN: 0971-1260 Vol-22, Special Issue-08
in collaboration with
Indira Gandhi Government Post Graduate College,
Bangarmau, Unnao-209868, Uttar Pradesh, India

गया है। सामाजिक विज्ञान का भी इनके साथ सम्बन्ध रहा है। स्वच्छता के समाज ास्त्र को एक नए उद्घाटित होने वाले विज्ञान की पहचान प्राप्त है। उसकी संकल्पनात्मक प्रयुक्तियाँ वैचारिक प्रवृतियाँ व अभ्यास प्रयुक्तियों के परिणामस्वरूप इसे विज्ञान माना जाता है। अपनी नवाचारी प्रयुक्तियों व प्रविधियों के द्वारा यह भाास्त्र क्रिया ील है। स्वच्छता समाज वि ाष्ट गतिविधि है। फलतः सार्वजनिक स्थान, घर–समुदायों के कचरे का निष्कासन, स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रवृतियां, सफाईकर्मियों की भूमिका, परिवे ा–पर्यावरण सम्बन्धी चर्चा व वैचरिकी इनका कार्य क्षेत्र है। इन पहलुओं के महत्व की समीक्षा, इस भाास्त्र का अहम कार्य है। स्वच्छता का समाज ास्त्र स्वच्छता के पारस्परिक सम्बन्धों का सामाजिक विज्ञान है। अर्थात स्वच्छता का समाज ास्त्र स्वच्छता व समाज के बीच के आन्तरिक सम्बन्धों का अभ्यास करने वाला भाास्त्र है, जिसमें मनुष्य और समाज के पारस्परिक प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। स्वच्छता समाज और संस्कृति से सम्बन्धित आयाम है, जहाँ स्वच्छता होगी, वहाँ के लोग समाज के प्रति मान और सांस्कृतिक मूल्यों का पालन करने वाले होंगें, लोगों के जीवन में स्वच्छता के मानो का सन्तुलन रहेगा। (नागला : 2017, झा : 2016, पाठक : 2013, 2015)

आज हमारे दे ा मे स्वच्छता सार्वजनिक रूप से एक महत्वपूर्ण विषय है। स्वच्छ भारत अभियान के तहत दे ा में एक साल में सम्भवत एक करोड से भी अधिक भाौचालयों का निर्माण हुआ हैं। पर इनमें से आधे भाौचालयो का भी इस्तेमाल नहीं होता। ने ानल सेम्पल सर्वे आर्गेनाइजे ान के मुताबिक ग्रामीण भारत में निर्मित 95 लाख भाौचालयों का सिर्फ 46 फीसदी ही इस्तेमाल होता है। भाहरी भारत में लोग भाौचलायों में अनाज रखते हैं या भण्डार घर के रूप में इसका इस्तेमाल करते है और पुरानी आदत के अनुरूप तड़के खेतों में ही जाते है। दे ा की पिछली सरकारो ने भी भाौचालय निर्माण पर जोर दिया था। पर भाौचालय निर्माण भर से इसका प्रयोग बढ़ने की गारन्टी नहीं है। उदाहरण के लिए, नागला के अनुसार, खुले में भाौच की प्रवृति एक सांस्कृतिक समस्या है जो हमारी आदत बन चुकी है। स्वच्छ भारत अभियान आं ाक रूप से ही सफल है क्योंकि अभी तक साफ–सफाई और भाौचलायों के इस्तेमाल के प्रति लोगों की मानसिकता में उस तेजी से बदलाव नहीं आया है, जो इस अभियान की सफलता के लिए जरूरी है। (नागला : 2017)

दुर्खीमवादी रूपरेखा में, 'स्वच्छता के समाज ास्त्र' को–अपवित्र से पवित्र की ओर स्थानान्तरण के रूप में देखा जाता हैं स्वच्छता के सन्दर्भ में लुईस ड्यूमा उचित रूप से कहते है कि भारतीय समाज एक स्तरित समाज है, जो जाति व्यवस्था के साथ धर्म पर आधारित है, जिसमें पवित्र व अपवित्र तत्व जुड़ा है। एम.एन.श्रीनिवास भी भाुद्धता व अ ाुद्धता की बात करते हैं जिसे जाति सम्बन्धित अन्तःक्रिया मे देख सकते हैं। उनकी संस्कृतिकरण की अवधारणा में, निम्न जाति सदस्यों के लिये स्वच्छता की धारणा अन्तर्निहित हैं। यदि दा ानिक रूप से, स्वच्छता के मुद्दे पर बात करें तो, यह प्राप्त होता है कि धर्म निरपेक्षीकरण एवं स्वस्थ समाज में अन्य धर्मों के प्रति धार्मिक असहिष्णुता में ह्रास और समायोजन मिश्रित व्यवहारों को देख सकते हैं। हिन्दू धर्म के सिद्धान्त के अर्न्तगत भी स्वच्छता के मद्दे पर व्यक्ति द्वारा सम्पूर्ण जीवन में किये जा रहे, पाप के भाुद्धीकरण के सन्दर्भ में भी स्वच्छता की बात की जाती है। इसी प्रकार, मृत्यु के पहले और पुनः जन्म लेने के लिये मोक्ष प्राप्त करना अनिवार्य है एवं उसे करने के सन्दर्भ में भारीर और आत्मा की स्वच्छता एक पूर्वस्थिति मानी गयी है। टालबोट (1986) के अनुसार, जैसे–जैसे समय बीता, स्वच्छता के अर्न्तगत व्यापक कर्तव्यों को स्वीकार किया गया और यह सिद्ध हुआ कि सैनिटरी सुधार केवल मानव के भौतिक जीवन तक प्रतिबन्धित नहीं है, बल्कि एक मानव जीव–होने के नाते उसकी समस्त क्रियाओं को प्रभावित करता है। अब यह माना जाता है कि स्वच्छता सम्बन्धी रूझान में असुविधा, दर्द, अस्वस्था मृत्यु, दोष अथवा अपराध जैसे कारकों को टालने, नष्ट करने अथवा कम करने की प्रवृत्ति निहित है। हमें यह बताया जाता है कि ये रक्षा बुराइयाँ–जैसे कि जीवन की हानि, स्वास्थ्य की हानि, और भौतिक अक्षमता जो लोगों पर आरोपित की जाती है, वह असंख्यात्मक है और, उनसे बचा जाना चाहिये।

व्यवहारिक स्वच्छता के अपने कार्य के परिचय में ई. ए. पार्क्स कहते है कि स्वच्छता भाब्द को इसके सन्दर्भ में लेने पर, यह मस्तिष्क और भारीरक की अतिउत्तम संस्कृति के सन्दर्भ में नियम सूचित करता है। इन दोनों को अलग करना असम्भव हैं। भारीर, प्रत्येक मानसिक व नैतिक क्रिया से प्रभावित होता है, मस्तिष्क भी भाारीरिक परिस्थितियों से गम्भीरतापूर्वक प्रभावित होता है। स्वच्छता की उत्तम व्यवस्था के लिये हमें भारीर, बुद्धि और नैतिक संकायों में एक उचित और सन्तुलित

Think India (Quarterly Journal)
ISSN: 0971-1260 Vol-22, Special Issue-08
in collaboration with
Indira Gandhi Government Post Graduate College,
Bangarmau, Unnao-209868, Uttar Pradesh, India

क्रम में, प्रि ाक्षित करना चाहिये, न कि केवल चिकित्सकों द्वारा सुझायी गयी हाइजीन के भाग को देखना है। सर जॉन साइमन के भाब्दों में, ''जब स्वच्छता सुधारक आधुनिक सभ्यता के अन्तःकरण से अनुरोध करते हैं तो मानव जीवन के परिणात्मक अपि ाष्ट के विरोध में वहीं, बल्कि एक व्यक्ति होने के उन उच्च और सुन्दर सम्भावनाओं के बेपरवाही से विलुप्त होने के विरोध में तथा खु ाहाली के लिये ऐसी क्षमताओं का निर्दयता से गला दबाने के विरोध में है। समाज को भी एक व्यक्ति की भाँति स्वयं को भौतिक पर्यावरण के साथ समायोजित करना चाहिये। प्रगति के सन्दर्भ में तथ्य क्या है? यह किससे मिलकर बनता है। समाज ाास्त्र का उत्तर होगा कि प्रगति के अन्र्तगत भौतिक कल्याण की भावना सामाहित होगी। तब तक स्वच्छता और समाज ाास्त्र के बीच सबन्ध इस प्रकार है। व्यक्ति समाज का एक आव यक तत्व है। उसके सामाजिक मूल्य व्यापक रूप से उसके स्वास्थ्य पर निर्भर करते है जबकि, बदले में उसका स्वास्थ्य आंि ाक रूप से उन पर परिस्थितियों के द्वारा निर्धारित होता है जो कि समाज उस पर आरोपित करता है। आज मानव जाति की बेहद निरा ाजनक प्रस्थिति निःसंदेह पिछले युगो और पुरानी पीढियों की स्वच्छता और सामाजिक परिस्थितियों का परिणाम है, लेकिन वे प्रभाव जिनकें अन्र्तगत आज की पीढ़ी का मानव स्वंय न्यूनाधिक रूप से उनके नियंत्रण के अन्र्तगत है और हो सकता है, ये प्रभाव वर्तमान और भविष्य की अच्छाई के लिए बने हो। (सक्सेना एवम् सक्सनो : 2017)

लाइव मिंट एंड वॉल स्ट्रीट जर्नल की 1 जनवरी 2014 को जारी रिर्पोट के अनुसार भारतीय स्वच्छता संकट में हैं। भारतीय राज्य ने सुरक्षात्मक सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए कुछ खास नही किया है। ने ानल सैम्पल सर्वे ऑगनाइजे ान (एनएसएसओ) द्वारा जारी नए आकंडो ने एक बार फिर दे ा में स्वच्छता की खराब स्थिति को रेखांकित किया है, वि ोष रूप से ग्रामीण भारत में जहाँ दे ा की दो–तिहाई जनता निवास करती है। एनएसएसओ द्वारा 2012 में बड़े पैमाने पर कराए गए सर्वेक्षण के हाल ही में जारी परिणामों के अनुसार केवल 32 प्रति ात ग्रामीण परिवारो मे स्वंय के भौचालय हैं। इसके अतिरिक्त 9 प्रति ात परिवारो ने भौचालय का उपभोग किया है हालांकि यह आंकडा वास्तविकता से अधिक हो सकता है। पिछली जनगणना के आंकड़ों से पता चला है कि भारत के लगभग आधे से भी कम परिवारों में भौचालय की उपलब्धता थी। अधिकां ा घरों में मोबाइल फोन तो थे पर भौचालय नहीं थे।स्वच्छता के क्षेत्र में खेदजनक एवं अपर्याप्त प्रगति ने भारत को विकास ाील दे ाों के संस्तरणक्रम में भी नीचे ला दिया है। अनुमानत एक अरब लोग है, जो खुले में भौच करते है, इनमें से आधे से अधिक भारत में रहते है। स्वच्छता की निम्न स्थिति भारतीयों के स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाती है, कुपोषण की उच्च दर में वृद्धि करती है और उत्पादकता में कमी उत्पन्न करती है। (अकरम : 2015) वि व बैंक के अनुमान के अनुसार, भारत में स्वच्छता के अभाव में दे ा में बीमारियों का बोझ बढ़ने से भारत को सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग 6 प्रति ात के बराबर नुकसान होता है। यह भी तथ्य है कि व्यस्को की तुलना में बच्चे अधिक प्रभावित होते हैं। बीमारियों का तीव्र प्रसार बड़े पैमाने पर बच्चों के पोषक तत्वों को अव ाोषित करने की क्षमता को बाधित करता है, उनके विकास को रोकता है। यह सब जानते हैं कि भारत के (और दक्षिण एि ाया के अधिकां ा) बच्चों में कुपोषण की दर उप–सहारा अफ्रीका के बच्चों से भी अधिक है। दक्षिण एि ाया में लैंगिक असामनता की उच्च दर, महिलाओं का निम्न स्वास्थ्य स्तर, वे कारक है जो जन्म के समय कम वनज के ि ा ाुओं की बड़ी संख्या के लिए जिम्मेदार हैं। उपरोक्त कारक भारत की स्वच्छता में कमी के अन्य प्रमुख आधार है। 4 जुलाई 2013 को स्वास्थ्य अर्थ ाास्त्री डीन स्पीयर्स ने तर्क प्रस्तुत किया कि भारत में कुपोषण का एक बड़ा हिस्सा अस्वस्थ वातावरण का परिणाम है। भारत में 73 करोड से अधिक लोग बुनियादी स्वच्छता के बिना रह रहे है। यह संख्या दुनिया में सबसे ज्यादा है। जनसंख्या के हिसाब से भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा दे ा है। स्वच्छ भारत अभियान के जरिये अत्यधिक प्रगति होने के बावजूद 73–20 करोड से अधिक लोग अब भी खुले, असुरक्षित अथवा गंदे शौचालयों का उपयोग करने को मजबूर है। महिलाओं या लड़कियों के लये बहुत बडी समस्या है। वाटरऐड्स स्टेट आफ द वर्ल्ड्स टायलेट्स 2017 की रिर्पोट कहती है कि भारत में 35.5 करोड़ महिलाओं और लड़कियों को अब भी शौचालय नसीब नहीं हैं।

वै वीकरण एवं प्रौद्योगिकीय विकास की तीव्र गति ने स्वच्छता के सवालों को बहुआयामी बना दिया है। विकसित दे ाों ने विकास ाील एवं अल्पविकसित दे ाों को तथा महानगरों/नगरों ने गांवों को या गांव के आसपास की

Think India (Quarterly Journal)
ISSN: 0971-1260 Vol-22, Special Issue-08
in collaboration with

Indira Gandhi Government Post Graduate College,

Bangarmau, Unnao-209868, Uttar Pradesh, India

भूमि को अपने औद्योगिक/नाभिकीय/इलैक्ट्रोनिक/प्रोद्यौगिकीय कचरे का 'डंपिग ग्राउन्ड' बना दिया है नदियों, सम्रुद, वन्य क्षेत्र इत्यादि में इस कचरे का निस्तारण के प्रयासों ने प्राकृतिक एवं जैव विविधताओं के सम्मुख संकट की स्थितियां उत्पन्न की है। इन सबके विरूद्ध जन चेतना के विस्तार के प्रयास भी जारी है और इस जनचेतना को तीव्र बनाये जाने की जरूरत हैं। (गुप्ता एवं चौहान : 2017) निश्कर्शत हम कह सकते है कि स्वच्छता एक बुनियादी समस्या है तथा सामाजिक विकास और प्रगति कों बनाये रखने के लिये स्वच्छता तथा स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों को तेजी से चिन्तन और क्रियान्वयन की परीधि में लाना होगा। सूचना प्रोद्यौगिकी की भूमिका (राय : 2011) जनचेतना और सामाजिक जागरूकता हेतु काफी प्रभावकारी हो सकती है।

संदर्भः

1. नगला, भूपेन्द्र कुमार (2017) : स्वच्छता का समाज ास्त्र : एक परिचयात्मक विम ि, भारतीय समाज ास्त्र समीक्षा 3(2) जुलाई–दिसम्बर 2016 4 जन0–जून2017 (पृ0 1–6), भारतीय समाज ास्त्र परिशद
2. झा, हेतुकर (2016) : सैनिटे ान इन इंडिया : ए हिस्टोरीको सोि ायोलॉजीकल सर्वे, ज्ञान पब्लिि ंग हाउस, नई दिल्ली।
3. पाठक, बिंदे वर (2015) : सोि ायोलॉजी आफ सैनिटे ान : इनवायरमेंटल सैनिटे ान, पब्लिक हेल्थ एंड सो ाल डिपरिवेशन, कल्पास पब्लिक ान नई दिल्ली।
4. सक्सेना, आ ीष एवम् सक्सेना विजय लक्ष्मी (2017) : आधुनिक भारत में धार्मिकता एवं स्वच्छता एक समाज ास्त्रीय परिप्रेक्ष्य : भारतीय समाज ास्त्र समीक्षा 3(2) जुलाई–दिस0 2016 4(1) जन0–जून 2017।
5. पाठक, बिन्दे वर (2013) :स्वच्छता का समाज ास्त्र (पर्यावरणीय स्वच्छता, जनस्वास्थ्य और सामाजिक उपेक्षा) सुलभ इंटरने ानल, सो ाल सर्विस आर्गेनाइजे ान, नई दिल्ली।
6. गुप्ता, राजीव एवं चौहान एस.सी (2017)स्वच्छता एवं समाज : एक आलोचनात्मक दृि ट, भारतीय समाज ास्त्र समीक्षा 3(2) जुलाई–दिसम्बर 2016 4(1) जनवरी–जून (2017) (पृ0सं0 126–129)
7. सक्सेना आशीष (2015) :सोि ायोलोजी आफ सैनिटे ान : थीम्स एंड पर्सपोक्टिव, कल्पाज पब्लिके ान, नई दिल्ली।
8. अकरम, मोहम्मद (2015) : सोि ायोलोजी आफ सेनिटे ान, सोि ायोलोजी आफ टेक्स्ट बुक सीरिज, कल्पाज पब्लिके ान दिल्ली।
9. राय, नीरज कुमार (2011) : सूचना प्रोद्यौगिकी और सामाजिक और सामाजिक संरचना, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली।